



विचारों एवं विकारों का चक्रव्यूह

संकलन : धीरेन्द्र स्वामी

आज जो हमारे जीवन में घटित हो रहा है, वह अतीत में किये गये हमारे कृत्यों का परिणाम है। भविष्य में जो भी होगा, वह वर्तमान में किये गये कृत्यों का ही परिणाम होगा, अर्थात् हमने जो बोया है, वही तो हमें काटना पड़ता है। अगर काँटे बोये हैं और भविष्य में उनसे उलझना ना पड़े, तो इसके लिये प्रयास किया जा सकता है।

मन में जैसे विचार पनपते हैं, वे हमारे मन को उसी के अनुरूप आन्दोलित करते हैं व प्रेरित करते हैं। शरीर की गतिविधियों के साथ-साथ मनुष्य का व्यक्तित्व भी वैसा ही निर्मित होने लगता है। मन की ऊर्जा जो बाहर की ओर बहने लगती है, उसी प्रवाह का नाम है 'विचार'। हमारी चेतना का बाहर की ओर बहने वाला प्रवाह ही 'विचार' है। मन विचारों की जन्मभूमि है। मनुष्य के मन में जैसे विचार पनपते हैं, उसका आचार व व्यवहार भी वैसा ही हो जाता है।

मनुष्य के मन में दो प्रकार के विचार उत्पन्न होते हैं। एक वे जा स्वतः ही उत्पन्न होते हैं। दूसरे वे विचार होते हैं, जो दूसरों से प्राप्त होते हैं। जैसे हम पानी को बिना छाने हानिकारक समझते हैं, तो फिर दूसरों के विचारों को बिना छाने अर्थात् बिना सोचे समझे कैसे अपना सकते हैं?

जब कोई व्यक्ति पड़ोस का कचरा लाकर आपके घर में फेंक दे, तो कैसे आप चिल्ला उठेंगे, गुस्सा करेंगे? लेकिन जब दूसरों द्वारा आपके दिमाग में कचरा भरा जाता है, तब आप उसकी परवाह ही नहीं करते। कोई भी व्यक्ति अपना सुख किसी से बाँटना नहीं चाहता, वही दुःख अकेले भोगना नहीं चाहता। वह उसे तो बाँटना चाहता है। दुनियाँ में हर व्यक्ति कहीं ना कहीं त्रस्त है और अपना दुखड़ा दूसरों के सामने रो रहा है। दूसरा तीसरे के सामने और तीसरा चौथे के सामने। इस प्रकार हम सब एक दूसरे का दुःख बाँट रहे हैं।

आम व्यक्ति सोचता है, कि दूसरों को अपने मन की बात कह लेने से मन हल्का हो जाता है। लेकिन वास्तविकता यह है, कि इस प्रक्रिया में दूसरों के दुःखों का बोझ भी हमारे मन पर आ पड़ता है। किसी और को दुखड़ा सुनाने से वह कम होने के स्थान पर बढ़ जाता है। जिस प्रकार पानी छानकर न पीने से अन्य जीवों की हिंसा होती है, उसी प्रकार पानी छानकर न पीने से अन्य जीवों की हिंसा होती है, उसी प्रकार बिना सोचे समझे दूसरों के विचारों को ग्रहण करना आपके लिए घातक हो सकता है।



जैसा आपका चिन्तन होगा, वैसा ही आपका जीवन होगा। विचार तो सत्योन्मुखी, शिवोन्मुखी, सौन्दर्योन्मुखी कैसे भी हो सकते हैं। कोई भी व्यक्ति जब दान देता है, तो परमात्मा के नाम पर दान देता है और वही व्यक्ति दूध में पानी मिलाकर ग्राहक को ठगता है, उस समय परमात्मा को भूल जाता है। वास्तव में उसे दान देते वक्त परमात्मा की नहीं अपनी प्रतिष्ठा की फिक्र रहती है।

आम आदमी की विचारधारा के तीन मुख्य केन्द्र बिन्दु हैं, तीन धुरियाँ हैं:-

(1) पैसे की चाहत :

प्रायः व्यक्ति दिन-रात धन-दौलत के बारे में ही विचार करता रहता है। अगर वह धार्मिक भी बनना चाहता है, तो कहीं ना कहीं उसके विचारों में धनिक बनने की चाहत रहती है। अगर वह मन्दिर भी जाता है, तो भगवान से धन की माँग करने के लिये। किसी सत्संग में या धर्मोपदेश सुनने जाता है, तब भी मन में दौलत पाने या फिर उसे बढ़ाने का विचार घूमता रहता है। जीवन का अधिकांश समय अधिक से अधिक धन कमाने व सम्पत्ति बनाने में व्यतीत हो जाता है।

(2) नाम की चाहत :

विचारधारा का दूसरा केन्द्र होता है, यश, कीर्ति व प्रतिष्ठा। नाम कमाने के लिये वह हर तरह के पापड़ बेलने को तत्पर रहता है। उसके लिये लाखों खर्च कर देता है। नाम और सम्मान दो प्रकार के होते हैं। एक वह जो हम लोगों से कहकर लेते हैं, दूसरा वह जो हमारे प्रति लोगों के दिलों में रहता है। आजकल व्यक्ति अपने पास से धन की थैली किसी को सौंपने के लिये, चाहे वह किसी धर्मशाला के निर्माण हेतु हो, विद्यालय भवन बनवाने हेतु हो अथवा कोई अन्य आयोजन हो, वह सम्मान समारोह आयोजित करवाता है। इस प्रकार वह अपने अहंकार की तुष्टि करवाता है।

(3) भोग की चाहत :

तीसरा व मुख्य केन्द्र बिन्दु है भोग-परिभोग का। सामाजिक मर्यादाओं के चलते, चेतन में अभिव्यक्त हो ना हो, अवचेतन मन में सतत् 'काम' से संबंधित विचार अक्सर चलते रहते हैं। परिणामस्वरूप हमारे क्रियाकलाप इससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाते।

अतः दाम, नाम और काम। ये तीन मूल केन्द्र बिन्दु हैं, हमारे सोच के जिनमें हम जीते हैं। अब अगर हमारी सोच में ही विकार है, तो फिर परिणाम भी तो उसी के अनुरूप होंगे। अगर हमारी सोच या विचार सकारात्मक हैं, तो हम अपने जीवन की हर कठिनाई से उबर सकते हैं। अतः निर्णय हमें करना है।

आजकल विचारों को विकृत करने में दूरदर्शन व सिनेमा के साथ-साथ इन्टरनेट का भी योगदान



कम नहीं है, जहाँ ऐसी सामग्री परोसी जा रही है, जो युवाओं के साथ-साथ बच्चों के विचारों को भी विकृत कर रही है।

- नज़र रखो अपने 'विचारों' पर, क्योंकि ये 'शब्द' बनते हैं।
- नज़र रखो अपने 'शब्दों' पर, क्योंकि ये 'कार्य' बनते हैं।
- नज़र रखो अपने 'कार्यों' पर, क्योंकि ये 'स्वभाव' बनते हैं।
- नज़र रखो अपने 'स्वभाव' पर, क्योंकि ये 'आदत' बनती है।
- नज़र रखो अपनी 'आदतों' पर, क्योंकि यही 'चरित्र' बनती हैं।
- नज़र रखो अपने 'चरित्र' पर क्योंकि यही जीवन का 'आदर्श' बनता है।